PART - A

(To be filled by the Candidate)

Date of Exam: 13.3.18

Class: M.A.

Year: FINAL

Paper code: 2444

Paper: CLINICAL AND COMMUNITY INTERVENTION

BUNDELKHAND UNIVERSITY, JHANSI, U.P.

OMR ANSWER BOOK (40 Pages)

PART - B

(TO BE FILLED BY THE EXAMINER)

SECTION A Q. No.	MARKS	SECTION B Q. No.	MARKS	SECTION C Q. No.	MARKS
1		1		1	
2		2		2	
3		3		3	
4		4		4	
5		5		5	
6		6		6	
7		7		7	
8		8		8	
9	21	9	39	9	
10		10		10	
11		11		11	
12		12		12	
13		13		13	
14		14		14	
15		15		15	

TOTAL IN WORDS

Paper Code

Examiner Name

Signature of Examiner

Evaluation Co-Ordinator Remark

6597355

1

लघु उत्तरी प्रश्न

Shrot Answer Type Question

① चिकित्सकीय हस्तक्षेप से आप क्या समझते हैं?

उ०– सामान्यत: किसी अस्वस्थ व्यक्ति को औषध या शल्य आदि प्रविधियों से पुनः स्वस्थ बनाने की प्रक्रिया को चिकित्सा कहा जाता है। इसे नैदानिक हस्तक्षेप भी कहा जाता है क्योंकि इसमें नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने व्यवसायी व पेशेवर क्षमता का उपयोग करते हुए सांवेगिक रूप से विक्षुब्ध एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति का उपचार करते हैं। इस चिकित्सा का उपयोग मनश्चिकित्सा के रोगियों के लिए लाभकारी होता है।

ओलबर्ग, "मनश्चिकित्सा सांवेगिक प्रकृति की समस्याओं के लिए उपचार का वह प्रारूप है जिसमें एक प्रशिक्षित व्यक्ति जानबूझकर रोगी के साथ पेशेवर सम्बन्ध इस उद्देश्य से कायम करता है कि उसमें धनात्मक व्यक्तित्व वर्धन हो तथा व्यवहार के विक्षुब्ध पैटर्न के मन्दित लक्षणों को दूर किया जा सके. परिवर्तन लाया जा सके।"

② नैदानिक मनोविज्ञान की समस्याओं का वर्णन कीजिए?

उ०- ① चिकित्सक की अस्पष्टता – चिकित्सक यदि सही नही होता है तो रोगी को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चिकित्सक रोगी के व्यवहार में थोड़ा परिवर्तन देखकर यह कह देता है कि वह पूर्ण रूप से सही है जो आगे चलकर समस्या पैदा करता है।

② रोगी का अपना मत – रोगी अपने आप मे थोड़ा सुधार देखकर समझने लगता है कि वह अब पूर्ण रूप से सही हो गया जबकि वह सही नही होता है।

③ रोगी के परिवार, दोस्तो का मत – रोगी अपने परिवार वालो एवं दोस्तो को उसके बारे में परेशान होते देख वह धारणा बनाता है और उनके सामने ऐसा बनता है जैसे उसे कुछ न हुआ हो वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जबकि वह स्वस्थ नही होता है।

③ चिकित्सक के महत्वपूर्ण दायित्व क्या है?

उ- ① चिकित्सक का महत्वपूर्ण दायित्व है कि वह रोगी के साथ एक सामान्य व्यक्ति के तरह व्यवहार करके उसकी चिकित्सा करे।

② चिकित्सक रोगी की सभी बातो को ध्यान पूर्वक सुने तथा जहाँ रोगी कुछ गलत बोले वहाँ सुधार करे।

③ चिकित्सक का क्लायंट से सम्बन्ध उसके अन्य लोगो के सम्बन्धो की तरह होना चाहिए तभी क्लायंट उसे अपनी सारी बातो को बता पायेगा।

④ चिकित्सक को क्लायंट के स्वास्थ्य पर सर्वाधिक प्राथमिकता देनी चाहिए।

⑤ चिकित्सक को क्लायंट से इस प्रकार सम्बन्ध रखना चाहिए कि वह उसका अपना ही है और वह उसे हर समय उसकी चिकित्सा में मदद करेगा।

⑥ चिकित्सक को क्लायंट से कभी भी घृणा नहीं करनी चाहिए कि क्लायंट कैसा व्यक्ति है अमीर है, गरीब है ये नही देखना चाहिए।

http://www.upadda.com

(4) बायोफीड बैक से आप क्या समझते हैं?

उ०- बायोफीड बैक एक ऐसी विधि है जिसमे रोगी की चिकित्सा तापक्रम के आधार पर की जाती है। जिसमे हृदय गति, रक्त चाप, हृदय की धड़कन, श्वास की गति आदि के आधार पर चिकित्सा की जाती है। इसमे चिकित्सक रोगी की इन जबाव देहियों का उल्लेख करता है।

Example- जैसे यदि किसी व्यक्ति को सिरदर्द है तो वह उसे तापक्रम के अनुसार ज्ञात करके उसके बारे में अनुमान लगायेगा। उसी प्रकार से यह चिकित्सा हृदय गति आदि के बारे में भी है। इसमे रोगियो का जो उपचार किया जाता है वह अन्य प्रकार की चिकित्सा विधियो की अपेक्षा सरल है।

बायोफीड बैक एक ऐसी चिकित्सा है जिसमे रोगियो का उपचार नियन्त्रित परिस्थिति में किया जाता है।

http://www.upadda.com

(5) बेक की संज्ञानात्मक चिकित्सा पर टिप्पड़ी लिखो।

उ० इस चिकित्सा विधि का प्रतिपादक बेक द्वारा विषादी रोगो के उपचार मे किया गया बाद में इसका उपयोग चिन्ता विकृति तथा दुर्भीति के रोगियों के लिए किया गया। इस पद्धति की मूलभूत पूर्वकल्पना यह है कि विषाद जैसी समस्या मूलतः स्वयं के बारे मे, वातावरण के बारे में तथा भविष्य के बारे आंकलन करता है और इसके आधार पर वह एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। इसमे स्वयं के बारे मे, वातावरण के बारे मे या भविष्य के बारे मे जो भी अनुमान लगाया जाता है उसके आधार पर चिकित्सा की जाती है। इसमे तीन तत्व प्रमुख है जिन्हे संज्ञानात्मक त्रिक कहा जाता है।

बेक की संज्ञानात्मक चिकित्सा अन्य चिकित्सीय प्रविधियो की तुलना में उत्तम है।

इसमे संज्ञानात्मक प्रक्रियो के आधार पर जो समस्या का समाधान होता है उसमे सार्थकता पायी जाती है।

6

(6) संव्यवहार विश्लेषण से आप क्या समझते हैं?

उ० – संव्यवहार विश्लेषण एक ऐसी चिकित्सीय विधि है जिसमें रोगियों की चिकित्सा विशिष्ट आधार पर की जाती है। Child, Young, Adult अर्थात् इसमें चिकित्सक प्रथम Child के आधार पर चिकित्सा अर्थात् प्रक्रिया को करता है फिर Young एवं Adult के आधार पर चिकित्सा करता है फिर तीनों द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर परिणाम प्राप्त करता है तथा चिकित्सा की प्रक्रिया को करता है। संव्यवहार विश्लेषण में चिकित्सक रोगी के जवाबदेहियों का उल्लेख करता है। उनका विश्लेषण करता है तथा जिसके आधार पर वह एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। तथा रोगियों को उसके अनुरूप कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

7

(7) मनश्चिकित्सा तथा परामर्श में अन्तर स्पष्ट करें।

उ० –

① मनश्चिकित्सा में रोगियों का उपचार औषध या शल्य आदि प्रविधियों से किया जाता है जबकि परामर्श में ऐसा नहीं किया जाता है।

③ मनश्चिकित्सा में नैदानिक विधियों के आधार पर रोगी की मानसिक समस्याओं से निपटने में मदद की जाती है जबकि परामर्श में ऐसा नहीं होता है।

② मनश्चिकित्सा में रोगी के व्यवहार पर जो विश्लेषण किया जाता है उसके आधार पर जो परिणाम प्राप्त होते हैं वे सार्थक होते हैं जबकि परामर्श में सार्थकता की कमी पायी जाती है।

④ मनश्चिकित्सा में चिकित्सक तथा क्लायंट दोनों के बीच सम्बन्ध औपचारिक होते हैं जबकि परामर्श में ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है।

(8) वैवाहिक चिकित्सा के महत्व का वर्णन कीजिए।

उ० – वैवाहिक चिकित्सा सामूहिक चिकित्सा की विधि है इसमे पति-पत्नि के बीच के सम्बन्ध को कायम करने के लिए चिकित्सा की जाती है। क्योंकि बहुत से व्यक्ति ऐसे होते है जो एक साथ तो रहते है पर उनमे वैवाहिक सम्बन्ध औपचारिक नहीं है। वैवाहिक चिकित्सा मे ऐसे व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान करके उनके सम्बन्ध को मधुर बनाने की कोशिश चिकित्सक द्वारा की जाती है। ताकि वे लोग अपने वैवाहिक सम्बन्ध मे अच्छा जीवन व्यतीत करे उनमे किसी प्रकार की वैमनस्यता न रहे। वे लोग अपने सम्बन्ध को और अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित रहे इस प्रकार की सलाह चिकित्सक द्वारा दी जाती है।

http://www.upadda.com

(9) उत्तम मानसिक स्वास्थ्य मे ध्यान की भूमिका का वर्णन करो?

उ० – उत्तम मानसिक स्वास्थ्य मे ध्यान की महत्व भूमिका है ध्यान के द्वारा व्यक्ति अपने आप में शान्ति का एहसास करता है ध्यान की अवस्था एक ऐसी अवस्था होती है जिसमे व्यक्ति अपना पूरा मन ध्यान मे लगाता है जो मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम बनाता है। ध्यान के द्वारा व्यक्ति की कई समस्याओ का निराकरण प्राप्त होता है व्यक्ति एक प्रकार से अपने आप को अच्छा महसूस करता है जिससे उसे मानसिक रूप से शान्ति मिलती है और व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य भी ऊँचा उठता है। ध्यान की अवस्था में व्यक्ति एक प्रकार से पूरा मांसपेशियो की एकाग्रता करता है एकाग्रचित होने से वह अपनी चिन्ता जैसी समस्यायों का भी अलगाव करता है और व्यक्ति एक ऐसी अवस्था मे होता है जिसमे उसके मन को शान्ति मिलती है जिससे उसका मानसिक स्वास्थ्य ऊँचा उठता है।

http://www.upadda.com

(10) सामाजिक कौशल कार्यक्रम पर टिप्पणी लिखो ?

80 –

सामाजिक कौशल कार्यक्रम समाज मे कुशलता लाने के लिए किये जाते है। जिसमे समाज में कुछ ऐसे कार्य किये जाते है जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ति कुशलता प्राप्त करे इसमे व्यक्तियों को कुछ ऐसे कार्य करने के लिए दिये जाते है वे लोग अपने जीवन में आगे बढ सके और कुछ ऐसा करे कि उनका जीवन उत्तम ढंग से व्यतीत हो।

सामाजिक कौशल कार्यक्रम मे व्यक्ति के जीवन को उन्नत बनाने का कार्य किया जाता है जो व्यक्ति को अपने पैरो पर खड़ा होने के लिए उन्हे नये-२ कार्य देता है कि जिससे समाज मे प्रगति हो। इसमे व्यक्ति को उन्नत बनाने के लिए कई व्यवसाय आदि प्रारम्भ किये जाते है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) मनोचिकित्सा क्या है ? मनोचिकित्सा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों का वर्णन कीजिए

30 –

सामान्यतः किसी अस्वस्थ व्यक्ति को औषध या शल्य आदि प्रविधि से पुनः स्वस्थ बनाने की प्रक्रिया को मनोचिकित्सा कहा जाता है। इसे नैदानिक हस्तक्षेप भी कहा जाता है क्योंकि इसमे नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने व्यावसायी व पेशेवर क्षमता का उपयोग करते हुए मानसिक रूप से अस्वस्थ एवं सांवेगिक रूप से विक्षुब्ध व्यक्तियों के व्यवहार को परिवर्तित करने की कोशिश करते है। इसका उपयोग मनोविकृति के रोगियों के लिए लाभकारी होता है। परन्तु ऐसे रोगियों को उपचार चिकित्सा के अलावा मेडीकल चिकित्सा भी देना अनिवार्य है।

ओल्वर्ग के अनुसार, " मनश्चिकित्सा सांवेगिक प्रकृति की समस्याओं

12

के लिए उपचार का यह प्रारूप है जिसमे एक प्रशिक्षित व्यक्ति जानबूझकर रोगी के साथ पेशेवर सम्बन्ध इस उद्देश्य से कायम करता है कि उसमे धनात्मक व्यक्तित्व वर्धन एवं विकास हो तथा व्यवहार के विक्षुब्ध पैटर्न के रूप में संक्षिप्त मंदित लक्षणों को दूर किया जा सके तथा उसमे परिवर्तन लाया जा सके।

मनोचिकित्सा की अवस्थाएँ निम्न हैं —

1. स्वतन्त्र साहचर्य की अवस्था
2. प्रतिरोध की अवस्था
3. स्वप्न विश्लेषण की अवस्था
4. स्थानान्तरण की अवस्था
5. समापन की अवस्था।

13

मनोचिकित्सा के महत्वपूर्ण लक्ष्य

① चिकित्सक तथा रोगी के बीच सामाजिक वातावरण को कायम करना — मनोचिकित्सा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि चिकित्सक तथा रोगी के बीच का सम्बन्ध सौहार्द्रपूर्ण होना चाहिए उनमे सामाजिकता की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार रोगी के अपने माता-पिता या शिक्षक के प्रति सम्बन्ध होते है वैसे ही चिकित्सक तथा क्लायंट के बीच भी होना चाहिए।

② चिकित्सा मे यथार्थता होना — मनोचिकित्सा का दूसरा लक्ष्य यह है कि चिकित्सा मे यथार्थता होनी चाहिए कि जो भी मनोचिकित्सा हो रही है उसमे सत्यता है और उससे उसकी समस्याओं का समाधान हो सकता है, अर्थात चिकित्सक को चाहिए कि वह रोगी की सभी बातो पर ध्यान दे।

http://www.upadda.com

(3) चिकित्सा की स्थिति –

मनोचिकित्सा में चिकित्सा की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि जो चिकित्सा हो रही है उससे क्लायंट अर्थात् रोगी की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है तथा परिवर्तन किया जा सकता है।

(4) चिकित्सक तथा रोगी के बीच के अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध को मजबूत करना –

मनश्चिकित्सा का महत्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि चिकित्सक तथा क्लायंट के बीच अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध होना चाहिए कि जो कुछ भी रोगी चिकित्सक को बताये वह बात वह अन्य किसी को न बताये क्योंकि गोपनीयता रखने से उनके सम्बन्ध मजबूत होते हैं।

http://www.upadda.com

(5) चिकित्सक द्वारा क्लायंट की समस्या पर जोर –

इसमें चिकित्सक द्वारा क्लायंट की समस्या पर जोर दिया जाता है

कि समस्या किस प्रकार की है उसका निदान कैसे किया जा सकता है।

~~(6) चिकित्सक तथा क्लायंट दोनों~~

(6) क्लायंट की जवाबदेहियों पर उल्लेख – मनोचिकित्सा में क्लायंट द्वारा जो भी जवाब दिया जाते हैं उनका उल्लेख किया जाता है चिकित्सक क्लायंट की जवाब देहियों पर ध्यान देता है और उसकी समस्याओं से निपटने में मदद भी करता है।

(7) क्लायंट की अनुमति के आधार पर गोपनीयता – मनोचिकित्सा में क्लायंट की अनुमति ली जाती है कि आप अपनी समस्या जो यदि बतायेंगे तो वह किसी और को नहीं बताई जायेगा सिर्फ यह बात चिकित्सक तक ही सीमित रहेगी।

(8) चिकित्सक-क्लायंट में विश्वसनीय कायमकरना – मनश्चिकित्सा में चिकित्सक तथा क्लायंट का एक दूसरे पर विश्वास होना चाहिए

② व्यवहार चिकित्सा का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए ?

उ०- व्यवहार चिकित्सा ऐसी चिकित्सा है जिसमे रोगी के अपअनुकूलित व्यवहार की जगह पर अनुकूलित व्यवहार प्रदर्शित करने की कोशिश की जाती है। व्यवहार चिकित्सा में रोगी के व्यवहार मे परिवर्तन लाने के लिए उसे प्रोत्साहित किया जाता है। इसमे वाटसन, थार्नडाइक, कोहलर आदि प्रमुख है।

व्यवहार चिकित्सा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

व्यवहार चिकित्सा के प्रतिपादन का श्रेय जे॰ बी॰ वाटसन को जाता है। असमुच मे वाटसन तथा रेनर दो ऐसे मनोवैज्ञानिक है जिसने अलबर्ट नाम का बच्चा तथा उजला चूहा पर प्रयोग किया। इन्होंने अलबर्ट नाम के बच्चे के सामने एक उजला चूहा रखा जैसे ही बच्चा

उजला चूहा से खेलने की कोशिश करता तो तेज आवाज कर दी जाती थी जिससे बच्चा डरता थी तथा जब ऐसा बार-2 किया गया तो बच्चा सभी रोयेदार चीजो से डरने लगा। रेनर ने कहा कि अर्जित डर को खत्म भी किया जा सकता है उन्होंने बच्चे के सामने चूहा रखा जिससे वह डरता था उसे बार-2 संपर्क कराया तथा उसके पास ले जाया गया जिससे बच्चा का धीरे-2 चूहे के प्रति डर खत्म हो गया।

इसी प्रकार से कोहलर ने भी प्रयोग किया तथा अन्य व्यवहारिक मनोवैज्ञानिको ने भी कई प्रकार की चिकित्सा प्रविधियो का विश्लेषण किया जो व्यवहार मे परिवर्तन लाने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा उसके अनुरूप व्यवहार करने की सलाह देता है।

व्यवहार चिकित्सा के प्रकार

व्यवहार चिकित्सा के निम्नांकित प्रकार है—
1. क्रमबद्ध असंवेदीकरण।
2. विरूची चिकित्सा
3. अन्तःस्फोटात्मक चिकित्सा एवं फ्लडिंग।
4. दृढ़ग्राही चिकित्सा
5. संव्यवहार विश्लेषण।
6. बायोफीड बैक विधि—

(1) क्रमबद्ध असंवेदीकरण—

यह व्यवहार चिकित्सा की ऐसी प्रविधि है जिसका प्रतिपादन वुल्पटर तथा वोल्फ द्वारा किया गया। क्रमबद्ध असंवेदीकरण मूलतः चिन्ता को कम करने की प्रविधि है। जो स्पष्ट नियम पर आधारित है कि एक ही समय मे व्यक्ति चिन्ता तथा विश्राम दोनो की अवस्था मे

http://www.upadda.com

नही रह सकता है। पहले रोगी को विश्राम की अवस्था मे रहने का प्रशिक्षण दिया जाता है फिर चिन्ता के क्रम को धीरे-2 प्रस्तुत किया जाता है। तथा इसके अनुरूप रोगी के व्यवहार का विश्लेषण किया जाता है।

(2) विरूची चिकित्सा—

इस प्रकार की चिकित्सा मे रोगी मे कार्य के प्रति विरूची पैदा की जाती है। इसमे रोगी विरूची पैदा करने के लिए विशेष दवा, करंट आदि दिया जाता है ताकि रोगी को उसके प्रति विरूची पैदा हो जाये।
Example— जैसे चिकित्सक शराब पीने वाले व्यक्ति की बोतल मे दवा मिला देता है तो व्यक्ति शराब को नही पचा पाता है और उसे शराब के प्रति विरूची पैदा हो जाती है।

(3) अन्तःस्फोटात्मक चिकित्सा एवं फ्लडिंग—

यह व्यवहार चिकित्सा की ऐसी विधि है जो विलोपन के नियम पर

http://www.upadda.com

आधारित है। इसमे व्यक्ति यह नही समझ पाता है कि उसका डर वास्तविक नही है जब वह यह समझ जाता है कि ये वास्तविक नही है तो वह वैसा डर कम कर देता है।

④ दृढ़ग्राही चिकित्सा – दृढ़ग्राही चिकित्सा व्यवहार चिकित्सा की ऐसी विधि है जिसमे रोगी यह नही समझ पाता है कि सभी लोगो के साथ उसके सम्बन्ध कैसे है वह जब यह सम्बन्ध उत्तम बनाने मे कामयाब हो जाता है तो उसके असामान्यता के लक्षण अपने आप ही दूर हो जाते है।

⑤ संव्यवहार विश्लेषण – यह भी व्यवहार चिकित्सा की विधि है। इसमे पुरुस्कार – दण्ड आदि के आधार पर चिकित्सा की जाती है।

व्यवहार चिकित्सा के गुण – दोष

गुण – व्यवहार चिकित्सा मैं रोगियो का उपचार अच्छे से किया जाता है जिससे उनके व्यवहार में परिवर्तन अपने आप ही आ जाते है।

व्यवहार चिकित्सा मे चिकित्सक क्लायंट के व्यवहार का विश्लेषण (विश्लेषण) विशेष प्रविधियो को अपनाकर करते है जो उत्तम है।

दोष – व्यवहार चिकित्सा का एक दोष यह है कि इसमे समय एवं धन की ज्यादा जरूरत होती है इसके अभाव मे उपचार नही किया जा सकता।

व्यवहार चिकित्सा द्वारा जो उपचार किया जाता है उसमे यथार्थता की कमी होती है

व्यवहार चिकित्सा मे सभी पहलुओ पर ध्यान नही दिया जाता है।

(3) परामर्श प्रक्रिया पर विस्तार से लिखिए
उ०-
परामर्श मे दो सहभागी होते है। पहला क्लायंट या रोगी तथा दूसरा चिकित्सक। क्लायंट वह व्यक्ति होता है जिसमे संवेगिक या मानसिक क्षुब्धताओ की मात्रा इतनी अधिक होती है उसे एक चिकित्सक की सलाह अपनी समस्याओ के समाधान मे लेनी पड़ती है।

दूसरा सहभागी वह होता है जिसे चिकित्सक कहा जाता है चिकित्सक कहा जाता है चिकित्सक वह व्यक्ति होता है जो रोगी को उसकी मानसिक समस्याओ से निपटने में मदद करता है उसमे परानुभूति, धनात्मक सम्मान आदि होना चाहिए।

परामर्श प्रक्रिया मे एक चिकित्सक तथा एक क्लायंट का होना जरूरी होता है कभी-2 दो चिकित्सक भी हो सकते है।

परामर्श की प्रक्रिया

(1) आरम्भिक सम्पर्क (प्रथम अवस्था) — परामर्श की प्रक्रिया मे सबसे पहले चिकित्सक तथा क्लायंट का संपर्क होता है। क्लायंट चिकित्सक के पास अपनी समस्याओं को लेकर जाता है। तो क्लायंट के मन मे तरह-2 की आशंकाऐ, शक, चिन्ता आदि होता है क्लायंट यह सोचता है कि चिकित्सक कैसा व्यक्ति होगा वह उसकी समस्याओ को सुनकर उसका उपहास तो नहीं करेगा आदि तरह-2 की बाते रोगी के मन मे आती है। तथा जब चिकित्सक यह समझ जाता है कि क्लायंट से आगे संपर्क रखा जा सकता है तो वह आगे की प्रक्रिया प्रारम्भ कर देता है और वह क्लायंट को चिकित्सा के लिए बुलाता है।

(2) क्लायंट तथा चिकित्सक के सम्बन्ध (द्वितीय अवस्था) — परामर्श प्रक्रिया मे जब चिकित्सक प्रक्रिया प्रारम्भ करता है तो क्लायंट के साथ पहले सौहार्द्र पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करता है। और चिकित्सक रोगी से कहता है कि वह उसका अपना ही व्यक्ति है।

http://www.upadda.com

(3) समस्या के प्रकार – (तृतीय अवस्था) इसमे चिकित्सक क्लायन्ट से पूछता है कि उसकी समस्या किस प्रकार की है और चिकित्सक क्लायंट से कहता है कि वह सभी बातो को बताये चाहे बात सार्थक हो या असार्थक, नैतिक हो या अनैतिक वह बिना संकोच के बताता जाये तथा जहाँ रोगी को हिचकिचाहट आदि होती है वहाँ चिकित्सक रोगी की मदद भी करता है।

(4) रोगी के सभी बातो पर चिकित्सक का ध्यान देना – (चतुर्थ अवस्था) चिकित्सक क्लायंट द्वारा बतायी सभी बातो को ध्यान से सुनता है वह रोगी द्वारा कही जाने वाली बातो का जवाब भी देता है वह ध्यान लगाकर सभी बातो को सुनकर रोगी मे यह विश्वास पैदा करता है कि चिकित्सक उसकी सभी बातो पर ध्यान दे रहा है जिस कारण रोगी को अपनी बाते बताने मे अच्छा भी लगता है, और इसमे यह कहा जाता है कि रोगी द्वारा कही गयी बातो को किसी और से नहीं कहा जायेगा।

http://www.upadda.com

(5) रोगी की समस्या पर विचार विमर्श करने के बाद समाधान – (पंचम अवस्था) जब रोगी की समस्या पर विचार विमर्श किया जाता है तो चिकित्सक यह समझ जाता है कि समस्या किस प्रकार की है और उसका निदान कैसे किया जा सकता है। चिकित्सक रोगी को समस्याओं से निपटने में मदद भी करता है। जब रोगी की समस्या पर विचार विमर्श होता है तो चिकित्सक रोगी की समस्या से निपटने में मदद भी करता है।

(6) परामर्श प्रक्रिया का समापन – (अन्तिम अवस्था) जब रोगी की समस्या का समाधान हो जाता है तो चिकित्सक क्लायंट से संपर्क कम करता है वह धीरे-2 संपर्क कम करता जाता है। जैसे पहले चिकित्सक क्लायंट को हफ्ते मे तीन बार बुलाता था तो धीरे-2 एक बार तथा फिर वह धीरे-2 संपर्क खत्म कर देता है। परामर्श प्रक्रिया की अन्तिम अवस्था समापन की अवस्था होती है जिसमे

चिकित्सक धीरे-2 क्लायंट से सम्बन्ध विच्छेद करता है। परामर्श प्रक्रिया मे चिकित्सक क्लायंट से अचानक सम्बन्ध विच्छेद इसलिए नही करता है क्योंकि यदि वह अचानक सम्बन्ध खत्म करेगा तो रोगी मे रोग के लक्षण दोबारा नज़र आयेगे।